रविवार 8 अगस्त, 2021

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: व्यवस्थाविवरण 4 : 36

"आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाईं कि तुझे शिक्षा दे।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 91 : 1, 9-12, 15

1 जोपरमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
9 हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा॥
11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 143 : 8, 10, 11

8 अपनी करूणा की बात मुझे शीघ्र सुना, क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग से मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं॥
10 मुझ को यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है! तेरा भला आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले!
11 हे यहोवा, मुझे अपने नाम के निमित्त जिला! तू जो धर्मी है, मुझ को संकट से छुड़ा ले!

2. भजन संहिता 34 : 7, 8, 17, 18

7 यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उन को बचाता है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

8 परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है।
17 धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन को सब विपत्तियों से छुड़ाता है।
18 यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है॥

3. उत्पत्ति 15 : 18 (भगवान) (*से 3rd* ,)

18 ... यहोवा ने अब्राम से यह वाचा बान्धी, कि मैं ने यह देश तेरे वंश को दिया है,

4. उत्पत्ति 16 : 1, 2 (मैं), 4, 6 (और)-10 (*से 2nd* ,), 15

1 अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी: और उसके हाजिरा नाम की एक मिस्री लौंडी थी।
2 मैं तुझ से बिनती करती हूं कि तू मेरी लौंडी के पास जा: सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए।
4 और वह हाजिरा के पास गया, और वह गर्भवती हुई और जब उसने जाना कि वह गर्भवती है तब वह अपनी स्वामिनी को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगी।
6 सारै उसको दु: ख देने लगी और वह उसके साम्हने से भाग गई।
7 तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा,
8 हे सारै की लौंडी हाजिरा, तू कहां से आती और कहां को जाती है? उसने कहा, मैं अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई हूं।
9 यहोवा के दूत ने उससे कहा, अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह।
10 और यहोवा के दूत ने उससे कहा, मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा।
15 सो हाजिरा अब्राम के द्वारा एक पुत्र जनी: और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हाजिरा जनी, इश्माएल रखा।

5. उत्पत्ति 17 : 1 (भगवान) (*से 2nd* ,), 5 (*से* ;), 15, 19 (*से* :), 20 (*से* 3rd ,), 20 (और मैं), 21 (*से 1st* ,)

1 ... तब यहोवा ने उसको अब्राम दर्शन देकर कहा।
5 सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा।
15 फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
19 तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना।
20 और इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है: मैं उसको भी आशीष दूंगा ... और मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊंगा।
21 परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बान्धूंगा।

6. उत्पत्ति 21: 3, 8 (*से*:), 9, 10, 12 (*से 2nd* ;), 14 (*से*:), 15, 17, 18 (*से*;), 19, 20 (*से 1st* ;)

3 और इब्राहीम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा।
8 और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया।
9 तब सारा को मिस्री हाजिरा का पुत्र, जो इब्राहीम से उत्पन्न हुआ था, हंसी करता हुआ देख पड़ा।
10 सो इस कारण उसने इब्राहीम से कहा, इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे: क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा।
12 तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान।
14 सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठ कर रोटी और पानी से भरी चमड़े की थैली भी हाजिरा को दी, और उसके कन्धे पर रखी, और उसके लड़के को भी उसे दे कर उसको विदा किया।
15 जब थैली का जल चुक गया, तब उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया।
17 और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा को पुकार के कहा, हे हाजिरा तुझे क्या हुआ? मत डर; क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उसकी आवाज परमेश्वर को सुन पड़ी है।
18 उठ, अपने लड़के को उठा और अपने हाथ से सम्भाल।
19 परमेश्वर ने उसकी आंखे खोल दी, और उसको एक कुंआ दिखाई पड़ा; सो उसने जा कर थैली को जल से भर कर लड़के को पिलाया।
20 और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा।

7. 1 कुरिन्थियों 2 : 5 (आपका), 9-16

5 ... तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो॥
9 परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं।
10 परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
12 परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
13 जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिला कर सुनाते हैं।
14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।
15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
16 क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 89 : 20-21

आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं।

2. 210 : 5-6

ईसाई धर्म का सिद्धांत और प्रमाण आध्यात्मिक अर्थों से समझा जाता है।

3. 505 : 16-28

आत्मा उस समझ को प्रदान करती है जो चेतना को बढ़ाती है और सभी सत्य की ओर ले जाती है। भजनहार कहता है: "महासागर के शब्द से, और समुद्र की महातरंगों से, विराजमान यहोवा अधिक महान है॥" आध्यात्मिक भावना आध्यात्मिक अच्छाई की समझ है। समझ वास्तविक और असत्य के बीच सीमांकन की रेखा है। आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

4. 506 : 18-21

आत्मा, ईश्वर, विकृत विचारों को उनके उचित चैनलों में इकट्ठा करता है, और इन विचारों को प्रकट करता है, जैसे वह एक पवित्र उद्देश्य की पंखुड़ियों को खोलता है ताकि उद्देश्य प्रकट हो सके।

5. 512 : 8-16

आत्मा शक्ति, उपस्थिति, और शक्ति का प्रतीक है, और पवित्र विचारों द्वारा भी, प्रेम से युक्त है। उनकी उपस्थिति के ये देवदूत, जिनके पास सबसे पवित्र प्रभार है, मन के आध्यात्मिक वातावरण में प्रचुर मात्रा में है, और परिणामस्वरूप अपनी स्वयं की विशेषताओं को पुन: पेश करते हैं। उनके व्यक्तिगत रूप जिन्हें हम नहीं जानते, लेकिन हम जानते हैं कि उनके स्वभाव भगवान के स्वभाव से संबद्ध हैं; और आध्यात्मिक आशीर्वाद, इस प्रकार, बाहरी रूप से, अभी तक व्यक्तिपरक हैं, विश्वास और आध्यात्मिक समझ के राज्य हैं।

6. 308 : 14-15

आत्मा से प्रेरित पितृपुरुषों ने सत्य की आवाज सुनी, और भगवान के साथ सचेत रूप से बात की जैसे कि आदमी आदमी के साथ बात करता है।

7. 84 : 3-13

प्राचीन पैगंबरों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी दूरदर्शिता हासिल की, दृष्टिकोण को शामिल किया, न कि बुराई और गलत तथ्य को दूर करने से दूर किया, — भविष्य की निष्ठा और मानवीय विश्वास के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी करना। जब विज्ञान में पर्याप्त रूप से उन्नत होने की सच्चाई के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है, तो पुरुष अनैच्छिक रूप से द्रष्टा और भविष्यद्वक्ता बन जाते हैं, जो राक्षसों, आत्माओं, या लोकतंत्रों द्वारा नियंत्रित नहीं होते हैं, लेकिन एक आत्मा द्वारा। यह वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और विचार का जो इस मन के साथ संबंध में है, अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने के लिए।

8. 581 : 4-7

स्वर्गदूतों। ईश्वर के विचार मनुष्य को पास करते हैं; आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान, शुद्ध और परिपूर्ण; अच्छाई, पवित्रता, और अमरता की प्रेरणा, सभी बुराई, कामुकता और नश्वरता का प्रतिकार करती है।

9. 298 : 25-30

एन्जिल्स ईथरीकृत मनुष्य नहीं हैं, अपने पंखों में पशु गुणों को विकसित कर रहे हैं; लेकिन वे दिव्य आगंतुक हैं, आध्यात्मिक पर उड़ रहे हैं, भौतिक नहीं, पिनियन। देवदूत ईश्वर के शुद्ध विचार हैं, सत्य और प्रेम के पंख हैं, चाहे उनका व्यक्तिवाद कुछ भी हो।

10. 299 : 7-17

मेरे स्वर्गदूत अतिविशिष्ट विचार हैं, जो कुछ सेपुलचर के दरवाजे पर दिखाई देते हैं, जिसमें मानव विश्वास ने अपने सबसे प्यारे सांसारिक आशाओं को दफन कर दिया है। सफेद उंगलियों के साथ वे एक नए और गौरवशाली विश्वास की ओर इशारा करते हैं, जीवन के उच्च आदर्शों और इसकी खुशियों के लिए। देवदूत भगवान के प्रतिनिधि हैं। ये उर्ध्वगामी प्राणी कभी भी स्व, पाप, या भौतिकता की ओर नहीं जाते हैं, बल्कि सभी अच्छे लोगों के दिव्य सिद्धांत के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जो हर वास्तविक व्यक्तित्व, छवि या भगवान की समानता को इकट्ठा करता है। बयाना देकर इन आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को ध्यान में रखते हुए वे हमारे साथ छेड़छाड़ करते हैं, और हम मनोरंजन करते हैं "स्वर्गदूतों।"

11. 95 : 28-3

मूढ़तापूर्ण भ्रमों से त्रस्त, संसार शैशवावस्था के पालने में सो रहा है, घंटों स्वप्न देख रहा है। भौतिक भावना अस्तित्व के तथ्यों को प्रकट नहीं करती है; लेकिन आध्यात्मिक भावना मानव चेतना को शाश्वत सत्य में ले जाती है। मानवता धीरे-धीरे पाप की भावना से आध्यात्मिक समझ में आगे बढ़ती है; सब कुछ ठीक से सीखने की अनिच्छा, ईसाईजगत को जंजीरों से बांधती है।

12. 265 : 3-9

मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

13. 574 : 25-30

हे प्रिय पाठकों, इस पर विचार कर, क्योंकि वह तेरी आंखों से टाट उतार देगा, और तू नर्म पंखों वाली कबूतरी को अपने ऊपर उतरते देखेगा। जिस परिस्थिति में आपका दुख-दर्द क्रोधपूर्ण और कष्टदायी लगता है, प्रेम अनजाने में एक परी का मनोरंजन कर सकता है।

14. 174 : 9-14

सामग्री के दृष्टिकोण से ऊपर उठते हुए, विचारों के नक्शेकदम धीमे हैं, और यात्री को एक लंबी रात को चित्रित करते हैं; लेकिन उनकी उपस्थिति के स्वर्गदूतों - आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान जो हमें बताते हैं कि "रात बहुत दूर है, दिन निकट है" - संकट में हमारे संरक्षक हैं।

15. 224 : 22-27

एक उच्च और अधिक व्यावहारिक ईसाई धर्म, न्याय का प्रदर्शन और बीमारी और स्वास्थ्य में नश्वर लोगों की जरूरतों को पूरा करता है, इस उम्र के द्वार पर प्रवेश के लिए दस्तक देता है। क्या आप इस स्वर्गदूत पर दरवाजा खोलेंगे या बंद करेंगे, जो नम्रता के साथ शांत होकर आएंगे, क्योंकि वह दोपहर को बूढ़े के पिता के पास आया था?

16. 559 : 8-16

वैज्ञानिक चिंतन का "हुआ डाउन वर्ड" महाद्वीप और महासागर से लेकर ग्लोब के रिमोटेस्ट बाउंड तक पहुंचता है। सत्य की अश्रव्य आवाज मानव मन के लिए है, "जब एक शेर दहाड़ता है।" यह रेगिस्तान में और भय के अंधेरे स्थानों में सुनाई देता है। यह बुराई के "सात आवाज़" पैदा करता है, और गुप्त अव्यवस्थाओं की पूरी डायपसन उच्चारण करने के लिए उनकी अव्यक्त ताकतों को रोकता है। तब सत्य की शक्ति प्रदर्शित होती है, — त्रुटि के विनाश में प्रकट किया जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6